**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना ,मधुबनी**

**मो० न० 9546743796**

**Email –** **mishrasm966@gmail.com**

**B. A. III**

 **रस निष्पत्ति**

 **भरत मुनिक सूत्रक दोसर व्याख्याता छथि भट्ट शंकुक जे न्याय सम्मत अपन अनुमिति वादक मत प्रस्तुत कएलनि अछि | शंकुकक मतानुसारें स्थायी भाव त वास्तव मे नायक आदि अनुकार्यहि मे रहैत अछि , मुदा वएह अनुकृतिक रूप धारण कएला पर रसक संज्ञा धारण करैत अछि | अभिनेताक द्वारा अनुकृत नायकादिक स्थायी भाव , अनुमानक द्वारा सामाजिक कें जे आनंद प्रदान करैत अछि , वएह रस कहबैत अछि | लोल्ल्टहिक सदृश एहिठाम अभिनेता मे नायिकादि पात्रक आरोपक कारणें रसक प्रतीति नहि अछि , वरन ओ प्रेक्षक अथवा सामाजिकक एक प्रकारक आनंद अछि जकर आधार अछि अनुमान |**

**हिनक अनुसार भरतक रस सूत्रक ‘ संयोगात ‘ शब्दक अर्थ अछि ‘ अनुमान्य ‘ | अनुमान्यक सम्बन्धात एवं निष्पत्ति: शब्दक अर्थ अछि अनुमिति , एहि अनुमितिक आधार पर हिनक मत अनुमितिवाद वा अनुमानवाद कहौलक | शंकुक चारि प्रकारक स्वीकृत ज्ञानक अतिरिक्त अनुमान ज्ञानक कल्पना कएलनि | चारि प्रकारक प्रसिद्ध ज्ञान अछि – निश्चय ज्ञान , मिथ्या ज्ञान , संशय ज्ञान , एवं सादृश्य ज्ञान | एकरा अतिरिक्त कोनो वस्तु कें देखि कए हम अनुमान लगा लैत छी , जेना कतहु दूर मे उठैत धुँआ कें देखिकए हम ई अनुमान कए लैत छी जे ओहि ठाम आगि होएत | एही प्रकारें अनुकर्त्ताक अभिनय सँ अनुकार्यक भावक अनुमान लगा लेल जाइत अछि | नैयायिक शंकुक एहि प्रक्रियाक पुष्टि तुरंग न्याय सँ कएलनि अछि | चित्रमे बनाओल घोड़ा कें देखि कए अनुमानक द्वारा हम ओकरा घोड़ाक रूप मे देखैत छी आओर ओहि सँ सम्बन्धित ज्ञान जागृत होइत अछि | ओही प्रकारें सामाजिक , अभिनेता कें रामादि नहि मानितहु चित्र तुरंग न्यायक आधार पर रामादि अनुकार्यक बातक अनुभव करए लगैत अछि सामाजिक अभिनेताक कुशल अभिनयक द्वारा अनुभाव संचारी भाव आदिक वास्तविक रुपमे प्रदर्शनकसहायते , स्थायी भावक अनुमान कए लैत अछि | आओर इएह अनुमान ओकर रसबोधक कारण अछि |**

 **अनुमितिवाद आरोपवाद सँ एक डेग आगाँ बढ़ि कए रसानुभुतिक प्रक्रिया कें उद्घाटित करबाक प्रयत्न करैत अछि | मुदा अनुमान सँ रसानुभूति कोना भए सकैत अछि ? मानि लेल जाए जे धुआँ कए दूर सँ देखि कए आगिक अनुमान कए लेल जाए त की हम आगिक गर्मीक अनुभव कए सकैत छी ? अनुमान सँ वास्तविकताक बोध परिलक्षित नहि होइछ ? अनुमान वास्तवमे बुद्धिक विषय अछि ; अनुभूतिक विषय नहि अछि | रस त प्रत्यक्ष अनुभवक विषय अछि | अतएव अनुमान सँ ओ कोना प्राप्त भए सकैत अछि | ( क्रमशः )**